© 2017 IJSRST | Volume 3 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X

हाइकु : एक परिचय

डॉ0 प्रवीन कुमार यादव
असि0 प्रो0 (हिन्दी), राजकीय पी0जी0कालेज आलापुर,
अम्बेडकरनगर उ0प्र0

शोध आलेख सार– हाइकु जापानी भाषा की अत्यन्त चर्चित काव्य विधा है। जापानी से इसका चलन हिन्दी में आया हिन्दी में आज यह काफी प्रचलित हो चला है। जापानी भाषा में विकसित 'हाइकू' काव्य रूप 'हाइ' और 'कू' के योग से बना है। 'हाइ' का अर्थ है 'नट' या 'नर' और 'कू' का अर्थ भंगिमा या अभिव्यक्ति। इस तरह हाइकू का अर्थ होगा– नट–भंगिमा या मानव–अभिव्यक्ति। मानव जीवन की विविध अनुभूतियों एवं मानव समाज की अनेक विसंगतियाँ भी हाइकु में रची जा रही हैं। डॉ0 भगवत शरण अग्रवाल, पंकज आनन्द, जयदेव तनेजा, पुरूषोत्तम सत्य प्रेमी, डॉ0 श्रीकृष्ण तिवारी, कमलेश भट्ट आदि ने हिन्दी में हाइकु की रचना की हैं।

मुख्य शब्द– हाइकु, जापानी, भाषा, हिन्दी, काव्य, मानव–अभिव्यक्ति।

हाइकु जापानी भाषा की अत्यन्त चर्चित काव्य विधा है। जापानी से इसका चलन हिन्दी में आया हिन्दी में आज यह काफी प्रचलित हो चला है। जापानी भाषा में विकसित 'हाइकू' काव्य रूप 'हाइ' और 'कू' के योग से बना है। 'हाइ' का अर्थ है 'नट' या 'नर' और 'कू' का अर्थ भंगिमा या अभिव्यक्ति। इस तरह हाइकू का अर्थ होगा– नट–भंगिमा या मानव–अभिव्यक्ति। 'हाइकू' काव्य रूप जापानी भाषा के 'रेंगा' नामक प्राचीन काव्य रूप से विकसित हुआ है। जापानी में रेंगा (श्रृंखलित पद्य) की पद्धति पर काव्य रचना करने की पुरानी परम्परा है। ''रेंगा की प्रारम्भिक तीन पंक्तियाँ, जिनसे रेंगा की श्रृंखला का आरम्भ होता था, 'होक्कु' कहलायीं और रेंगा में 'होक्कु' का विशेष महत्त्व माना जाना लगा। होक्कु में ऋतु सम्बन्धी संकेत होना भी आवश्यक हो गया।''[1] होक्कु यानी रेंगा (श्रृंखलित पद्य) की आरम्भिक तीन पंक्तियों की रचना अत्यन्त गंभीर होती थी। इसे लिखने का अधिकार एवं समझने का माद्दा जन–सामान्य को न था। आगे चलकर 'होक्कु' स्वतंत्र रूप से लिखे जाने लगे। इसमें हास्य–व्यंग्य का पुट डालकर तथा शास्त्रीय अनुशासन को ढीलाकर जो नई कविता लिखी गयी, उसे 'हाइकाइ' कहा गया। यह आम जन में अत्यन्त लोकप्रिय हुआ। ''होक्कु अथवा हाइकाइ रेंगा के बन्धन से मुक्ति पाकर स्वतंत्र कविता के रूप में प्रतिष्ठापित हुआ और 'हाइकु' के नये नाम से जापानी कविता की महत्त्वपूर्ण विधा के रूप में विकसित हुआ।''[2]

पन्द्रहवीं शताब्दी के जापानी कवि यामाजाकि सोकान (1465–1553) और आराकिदा मोरिताके (1472–1549) हाइकु के आरम्भिक कवि माने जाते है। आगे चलकर मात्सुओ बाशो (1644–1694) ने 'हाइकु' को अपनी सशक्त लेखनीय से काव्य विधा के रूप में प्रतिष्ठित किया। जापानी कविता में

उद्भूत एवं विकसित यह काव्य–विधा आज विश्व की अनेक भाषाओं में अंगीकृत होकर लोकप्रिय हो चुकी है। हिन्दी में 'अज्ञेय' हाइकु के प्रथम प्रयोक्ता हैं। आज तो हिन्दी में सैकड़ों कवि 'हाइकु' लिख रहे हैं। जैसे गजल विधा हिन्दी में अत्यन्त लोकप्रिय हो चली है, वैसे ही हाइकू भी।

'हाइकु' में 5–7–5 के क्रम में कुल तीन पंक्तियों में सत्रह वर्ण होते हैं। इसमें दो विरोधी विम्ब होते हैं। ''दो विरोधी विम्बों का द्वन्द्व हाइकु में नाटकीय सजीवता और अप्रत्याशित सौन्दर्य संवेदन पैदा करता है। 'हाइकु' थोड़े में बहुत कहता है। वह भी कहता है, जो वह नहीं कहता।''[3] हाइकु के सन्दर्भ में हाइकु के प्रतिष्ठापक बाशो का कहना है कि ''हाइकु दैनिक जीवन में अनुभूत सत्य की अभिव्यक्ति हैं, वह सत्य एक विराट सत्य का अंग होना चाहिए। हाइकु सम्पूर्ण कविता नहीं हैं, वह विराट सत्य की ओर इंगित करने वाली सांकेतिक अभिव्यक्ति हैं।'' समालोचक डॉ0 नामवर सिंह के शब्दों में, ''हाइकु एक संस्कृति हैं, एक जीवन–पद्धति हैं। तीन पंक्तियों के ये लघु गीत अपनी सरलता, सहजता, संक्षिप्तता के लिए जापानी साहित्य में विशेष स्थान रखते हैं। इसमें एक भावचित्र बिना किसी टिप्पणी के, बिना किसी अलंकार के प्रस्तुत किया जाता हैं और वह भावचित्र अपने आप में पूर्ण होता हैं। इसका सम्बन्ध जिस दर्शन से हैं, वह जेन या ध्यान–सम्प्रदाय बौद्धमत का कहा जाता हैं।''[4]

हाइकु के स्वरूप और प्रकृति का विश्लेषण करते हुए प्रो0 कल्याण मल लोढ़ा ने लिखा हैं, 'हाइकु कविता सहज अभिव्यक्ति की ही नहीं, सहज अनुभूति की भी कविता है। हाइकु में कहे गये का महत्व इसलिए अधिक है कि वह बहुत कुछ 'अनकहे' की समर्थ भूमिका स्पष्ट करता है, जिससे वह भी सम्प्रेषित होकर 'कहा गया' ही बन जाता है।''[5] यद्यपि क्लासिक रूप में हाइकु में 5–7–5 के क्रम में कुल सत्रह वर्ण ही होते हैं, किन्तु अब हाइकु 5–5–7 या 7–5–5 के वर्ण क्रम में भी लिखे जा रहे हैं। जापानी कविता में इन्हें फ्री हाइकु यानी मुक्त हाइकु या नव हाइकु कहा जाता है, परन्तु हिन्दी में 5–7–5 वर्ण क्रम ही प्रचलित व मान्य है। वर्ण क्रम तो इसका कलेवर है किन्तु हाइकु काव्य की आत्मा के लिए जैसा कि डॉ0 नामवर सिंह या डॉ0 कल्याण मल लोढ़ा ने इंगित किया है, एक विशिष्ट अनुभूति का होना आवश्यक है। 5–7–5 वर्ण–क्रम में कुछ भी लिख देने मात्र से वह हाइकु नहीं बन जाता है। डॉ0 सत्यभूषण वर्मा हाइकु काव्य के लिए तीन शर्तें आवश्यक मानते हैं–

1. उसमें ऋतुबोधक पद हों अर्थात् प्रकृति के साथ उसका सम्बन्ध हो।
2. उसमें किसी भाव या वस्तु विम्ब का यथावत्– तटस्थ चित्रण हो।
3. उसमें जीवन के किसी गहन सत्य का सांकेतिक उद्घाटन हो।

बाशो के विश्व प्रसिद्ध हाइकु–''फुरू इके या/काबाजु तोबिकोमु/मिजु नो ओतो!''– का अनुवाद विश्व की अनेक भाषाओं में किया गया है। बंगला में गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर और हिन्दी में अज्ञेय जी जैसे रचनाकारों ने इसका अनुवाद प्रस्तुत किया है। डॉ0 सत्यभूषण वर्मा ने इसका अनुवाद किया है–''ताल पुराना/कूदा दादुर/पानी का स्वर।'' इसकी व्याख्या करते हुए वे लिखते हैं 'पहली दृष्टि में यह एक सीधा–सादा चित्र है, परन्तु इसकी अनेक दार्शनिक व्याख्याएँ प्रस्तुत की जा चुकी हैं। वस्तुतः यह हाइकु कवि की उस उन्मेष अवस्था की अभिव्यक्ति है, जिसे समझने के लिए जेन दर्शन की पृष्ठभूमि

आवश्यक है। कवि की कुटिया के समीप एक पुराना ताल है। शायद उसका प्रयोग भी नहीं होता। कवि चिन्तन में डूबा है। अचानक घास से भरे हुए तट से उस शांत तालाब में कूदते हुए मेढक ने जल में जो हल्की सी ध्वनि की, उससे कवि के मन में उन्मेष हुआ। कवि कुछ देखता है, कुछ सुनता है, उसकी एक अनुगूँज उसकी चेतना में उठती है और अनुगूँज के उस क्षण को वह उपर्युक्त शब्दों में बाँध देता है। बाशो के हाथों में हाइकु मात्र शब्दाभिव्यक्ति न रहकर आध्यात्मिक अन्तर्दृष्टि की अभिव्यक्ति बन जाता है।''[6]

जब कोई काव्य रूप जन जीवन में काफी लोकप्रियता हासिल कर लेता है, तब उसकी विषयस्तु/अन्तर्वस्तु का विस्तार भी हो जाता है। जिसे प्रकार अंग्रेजी में सॉनेट या उर्दू की गजल मूलतः प्रेमभाव की कविता थी, किन्तु जन प्रियता के चलते उसे अन्य भावों की वाहक भी बना लिया गया, ठीक उसी प्रकार आज जापान एवं अन्य देशों के साथ–साथ हिन्दी में भी हाइकु अपने लघु कलेवर में अनेक भावों का वाहक बन गया। आज मानव जीवन की विविध अनुभूतियों एवं मानव समाज की अनेक विसंगतियाँ भी हाइकु में रची जा रही हैं। डॉ0 भगवत शरण अग्रवाल, पंकज आनन्द, जयदेव तनेजा, पुरूषोत्तम सत्य प्रेमी, डॉ0 श्रीकृष्ण तिवारी, कमलेश भट्ट आदि ने हिन्दी में हाइकु की रचना की हैं। कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं–

1. 'छोटी चिड़िया/चाह नभ छूने की/बाज का डर।' (पंकज आनन्द)
2. 'झरते पत्ते/कहानी कह गये/आशियाने की।' (भगवत शरण अग्रवाल)
3. 'जनतंत्र में/महंगा है राशन/सस्ता भाषण।' (पुरूषोत्तम सत्य प्रेमी)
4. 'नया बजट/मदारी की रस्सी/आसमान पे।' (उर्मिला कौल)
5. 'क्या कहूँ सखी/भूख बनी सौतिन/जलाए पेट।' (वेदज्ञ आर्य)
6. 'पहले गढ़े/पत्थरों से देवता/उन्हीं से भीख।' (भगवत शरण अग्रवाल)
7. 'कोयल गाती/हरी आम की डाली/आग लगाती।' (सुधा गुप्ता)
8. 'बुद्धिजीवी हूँ/दुम भी हिलाता हूँ/भौंकता भी हूँ।' (भगवत शरण अग्रवाल)
9. 'सूखी डालो में/फूट पड़ी कोपलें/आया बसंत।' (शैल सक्सेना)

इस प्रकार हाइकु धीरे–धीरे हिन्दी कविता में प्रचलित और लोकप्रिय हो चला है।

सन्दर्भ

1. जापानी हाइकु और आधुनिक हिन्दी कविता, सत्य भूषण वर्मा, पृष्ठ सं0 10
2. वही पृष्ठ सं0 11
3. हाइकु (रीवा), अंक–3, मई 1978, आदित्य प्रताप सिंह
4. हाइकु (नई दिल्ली), पत्र–1, फरवरी 1978
5. वही, पत्र–3 अगस्त 1978
6. जापानी हाइकु और आधुनिक हिन्दी कविता, सत्य भूषण वर्मा, पृष्ठ सं0 63